विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग -सप्तम, विषय- हिंदी

दिनांक -29 अगस्त 2020

Based on NCERT pattern

।।अध्ययन -सामग्री।।

सुप्रभात बच्चों , पिछले दो कक्षा से लगातार आप राम प्रसाद 'बिस्मिल' द्वारा अपनी मां के बारे में लिखे गए पाठ को पढ़ रहे हैं ।

उसी पाठ में अब हम आगे बढ़ेंगे .....

।। मेरी मां ।।

इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण- परि शोध करने के प्रयत्न करने का भी अवसर ना मिला ;इस जन्म में तो क्या यदि अनेक जन्मों में भी सारे प्रयत्न करूं तो भी तुम से उऋण नहीं हो सकता ।जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस दुख जीवन का सुधार किया है ,वह अवर्णनीय है । मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने किस प्रकार अपनी दैवी वाणी का उपदेश देकर मेरा सुधार किया है । तुम्हारे दया से ही मैं देश -सेवा में संलग्न हो सका ।

वर्णन - इस अनुच्छेद में विश्व में अपनी मां के कर्मों का गुणगान करते हुए कहते हैं कि तुमने जो मेरे लिए किया है ,उस कर्ज से मैं जीवन

भर मुक्त नहीं हो सकता । मैंने यह करीब से देखा है कि तुमने इस सामान्य जीवन को किस तरह से सुधार कर असाधारण और विलक्षण बना लिया है । तुम्हारा यह प्रयास वर्णन से भी ऊपर है । इसका वर्णन नहीं हो सकता मेरे जीवन के प्रत्येक पल का तुमने अपने दैवीय गुणों से सुधार करने की कोशिश की है और मैं आज जो कुछ भी हूं वह तुम्हारी बदौलत हूं । अगर तुम मेरी मां नहीं होती तो शायद मैं एक देशभक्त नहीं होता ।

प्रश्न - बिस्मिल जीवनभर मां के ऋण से उऋण क्यों नहीं हो सकते ?पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट करें ।